

## ॥ श्री पुष्पदंत जिन पूजन ॥

रचयिता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।  
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थकर पावन ।  
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।  
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

सुविधि विधि हरनार हो, पुष्पदंत जिनराज ।  
भक्तिभाव से अर्चना, मम उर आओ आज ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद अडिल्ल)

मोह महामल नाश अमल आतम हुए ।  
क्षय कर जन्म-मरण को परमातम हुए ।  
पुष्पदंत जिनराज चरण जल से जजें ।  
पथ पर चलें आपके पद पंकज भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषाएं क्षीण भवातप को हरा ।  
हो शीतल तुम परिणति में सुख संचरा ।  
देव सुविधि विधि-जन आकुलता हरो ।  
चंदन सम मम अंतर भी शीतल करो ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अविनाशी निज आतम जानकर ।  
पाएं अक्षय पद तुमको पहिचान कर ।  
क्षय कर क्षणिक विकारी विप्लव वर्तना ।  
हो अक्षत-पुर-वासी अक्षय अर्चना ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रम्हवासी निज शुद्धातम में तुम रमें ।  
विषय वासना कृत विकृत विष को वमे ।  
पुष्पदंत के पद-पुष्पों में पुष्प यह ।  
करें समर्पण हरे रतिपति विग्रह ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव अमि के अशन-रसन से तृप्त हो ।  
हुआ विलोपित इच्छा-सागर रिक्त हो ।  
तृष्णाकुल मैं देव सुविधि व्यंजन लिये ।  
चरण शरण में खड़ा बसो मेरे हिये ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा भले अज्ञान अनादि काल से ।  
पर न रहेगा क्षणिक अरे जंजाल ये ।  
जिन का निज का दर्शन तम परिहार रे ।  
रत्न दीप से अर्चन केवल धार रे ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष सब दोष नाश परिशुद्ध हो ।  
परिणति में भी अतः प्रभु अविरुद्ध हो ।  
धूप समर्पण अर्चन हेतु हे विभो ।  
हरो विकारी भाव सभी मेरे प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म-साधना विधि सुविधि मोक्ष की ।  
निजाधीन निष्काम निराकुल सौख्य की ।  
शेष सभी जो यत्न किए निष्फल प्रभो ।  
अतः चरण में करें समर्पण फल विभो ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण हुए हो पूर्णभाव आराध कर ।  
छोड़ सभी परभाव निजातम साधकर ।  
पुष्पदंत की करें अर्घ्य से अर्चना ।  
पाएं पद अनमोल यही अभ्यर्थना ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### पंचकल्याणक अर्घ्य

(धत्तानंद)

तीर्थकर वंदें नित अभिनंदें पद अरविंदे शीश धरें।  
पांचों कल्याणक समकित दायक मोद बधायक भक्ति करें।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद रोला)

दिव्य रत्न काकंदी-पुर में था आने को ।  
बरसाए रे रत्न गगन गाथा गाने को ।  
षोडश स्वप्न लखे माता जयरामा जी ने ।  
नवमी फाल्गुन कृष्ण दिवस सब मंगल कीने ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्गशीर्ष सुद एकम को इंद्रासन कांपा ।  
लख अवधि सुरपति ने सप्त कदम भू नापा ।  
नमन बाल तीर्थकर को कर शचि संग आए ।  
पांडुक पर अभिषेक किया तांडव रचवाए ।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमण्डिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तड़ित पतन को पावन दीक्षा निमित्त बनाया ।  
जन्मदिवस दिन गृह तज वन वैरागी आया ।  
मौन-वचन तन-अचल सुथिर-मन मुनिवर ध्यानी ।  
तीन-कषाय-विनाश नाश-अघ समरससानी ।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमण्डिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक-द्वितीया-शुक्ल शुक्ल से केवल पाया ।  
पौरुष दरसन ज्ञान अनंता सुख उपजाया ।  
सम से समोसरण पा सुविधि विधि समझाते ।  
सुंदरतम पथ रतनत्रय मुक्ति दिखलाते ।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन तज करम योग संयोग सभी विनशाया ।  
अंतिम पाया शुक्ल ध्यान धर शिवपद पाया ।  
शुक्ल अष्टमी भादो पर भू अष्टम धाए ।  
सुप्रभ टोंक शिखर से लोक शिखर को पाए ।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ल अष्टम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### जयमाला

(दोहा)

पुष्पदंत पद पुष्प को, वंदें सुविधि सुजान ।  
विधि विदारण हेतु प्रभु, गावें तुव गुणगान ।

(छंद त्रोटक)

जय पुष्पदंत गुणवंत प्रभो, मोहादिक अंत महंत विभो ।  
जय नंत चतुष्टय वंत संत, भगवंत हंत-अरि मुक्तिकंत ॥  
जय वीतराग निज निधि सुपाग, रुष-राग-आग-जग-जाल-त्याग ।  
जय केवलज्ञान महान लियो, भविभागन वश उपदेश कियो ॥

ध्वनि-दिव्य कहे सब द्रव्य रहे, सब तत्त्व रहे निज सत्त्व महे ।  
ध्वनि-दिव्य कहे निजमाहि रहे, निजबोध चहे थिरता ही गहे ॥

ध्वनि-दिव्य कहे शिव ताहि लहे, ध्वनि-दिव्य कहे चिरकाल रहे ।  
ध्वनि-दिव्य कहे शिवथल इतना, ध्वनि-दिव्य कहे शिवमग जितना ॥

समकित-बोधी-चारित्र त्रिधा, इकता शिवमग है भेद द्विधा ।  
उपचार नियत नित साथ रहे, बिन निश्चय सहचर पातक है ॥

परद्रव्यन से परभावन से, निजआतम निज में भिन्न बसे ।  
निजआत्म रुचि सम्यकदर्शन, निजबोध ज्ञान-सम्यक तत्क्षण ॥

सम्यकचारित निज में थिरता, निश्चय रत्नत्रय मुक्तिरथा ।  
सब सप्त-तत्त्व की निज पर की, श्रद्धा देवागम गुरुवर की ॥

जिन आगम द्वादश अंग तथा, अनुयोग चार सब ज्ञान यथा ।  
यह समकित श्रद्धा ज्ञान सही, लखकर सहचर विवहार कही ॥

व्रत-द्वादश एकादश-प्रतिमा, यत्नाचारी श्रावक गरिमा ।  
तन नग्न दशा निश्छल वृत्ति, सब मूलगुणों से युक्त यति ॥

जय-परिषह द्वादश-तप तपते, मुनि ध्यान ज्ञान आगम जपते ।  
यह सब चारित उपचारित है, शिवमग आगम विवहार कहे ॥

यों शिव, शिवमग उपदेश दिया, भविजन को ज्ञान विशेष दिया ।  
निज होनहार से पा सुकाल, पुरुषार्थ धार कर हो निहाल ॥

तुम आयु अंत में कर्म अंत, संसार अंत कर सिद्ध संत ।  
हे पुष्पदंत तुम पंथ सेव, भगवंत बनूं तुमसा स्वमेव ॥

(धत्तानंद)

तीर्थकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।  
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णाढ्यं महाढ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, मुक्तिकंत भगवंत ।  
आराधन कर आपकी, गमन करें शिवपंथ ।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।